सामवेद

वेदों के मध्य सामवेद की उत्कृष्टता श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण की इस उक्ति से प्रमाणित होती है- वेदानां सामवेदोऽस्मि (10/42)। वेदों में साम का विशेष महत्त्व इसलिए था कि देवताओं तक स्तुतियों की पहुँच उनके सुन्दर और शुद्ध गायन पर ही अवलम्बित थी। बृहद्देवता का कहना है कि जो पुरुष साम को जानता है वही वेद के रहस्य को जानता है- 'सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्।'

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

सामन का वास्तविक अर्थ गान है। आचार्य कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार, ऋग्वेद के मन्त्र जब विशिष्ट गान-पद्धति से गाए जाते हैं, तो उनको सामन् (साम) कहते हैं। अतएव पूर्वमीमांसा में गीति या गान को साम कहा गया है - गीतिषु सामाख्या (2/1/36)। बृहदारण्यको-पनिषद् में 'सा च अमश्चेति तत्सामः सामत्वम् (1/3/22) वाक्य से 'सा' का अर्थ ऋक् और 'अम' का अर्थ गान बताकर साम का व्युत्पादन किया गया है।

साम संहिता का संकलन उद्गाता नामक ऋत्विज् के लिए किया गया है तथा यह उद्गाता देवता के स्तुतिपरक मन्त्रों को ही आवश्यकतानुसार विविध स्वरों में गाता है।

सामवेद की परम्परा श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यास के शिष्य जैमिनि से प्रारम्भ होती है। जैमिनि ने अपने पुत्र सुमन्तु को, सुमन्तु ने अपने पुत्र सुन्वान् को तथा सुन्वान् ने अपने पुत्र सुकर्मा को पढ़ाया। इस प्रकार सामवेद की अध्ययन परम्परा निरन्तर चली आ रही है। सामतर्पण के अवसर पर साम गाने वाले जिन 13 आचार्यों को तर्पण दिया जाता है, वे निम्न हैं →
(i) राणायन (ii) सात्यमुग्रि व्यास (iii) भागुरि-औलुण्डि (iv) गौल्गुलवि (v) भानुमान (vi) औपमन्यव (vii) दारालि (viii) गार्ग्य (ix) सावर्णि (x) वार्षगणि (xi) कुथुमि (xii) शालिहोत्र (xiii) जैमिनि।

यद्यपि सामवेद की सहस्र शाखाएं होने का उल्लेख महाभाष्य में मिलता है तथापि इनमें से आज राणायन, कुथुमि और जैमिनि आचार्यों के नाम से प्रसिद्ध राणायनीय, कौथुमीय और जैमिनीय - तीन शाखाएं प्राप्त होती है। प्रथम शाखा दक्षिण भारत में प्रचलित है तथा दूसरी शाखा उत्तरभारत में विशेष प्रचलित है। केरल में जैमिनीय शाखा

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

का अध्ययन - अध्यापन कराया जाता है।

सामवेद के मन्त्रभाग में आर्चिक और गान हैं। आर्चिक दो भागों में बंटा है - पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। दोनों में कुल मिलाकर 27 अध्यायों में 1875 मंत्र पठित हैं। आचार्य कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार इन 1875 मंत्रों में से 1771 मंत्र ऋग्वेद के हैं। इस प्रकार केवल 104 मंत्र सामवेद में नए हैं। इन 104 मंत्रों में से भी 5 पुनरुक्त हैं। इस प्रकार ऋग्वेद में सर्वथा अप्राप्त 99 मंत्र हैं।

सामवेद के अधिकांश मंत्र ऋग्वेद के 8 वें तथा 9 वें मण्डल से लिए गए हैं। सामवेद में उपासना प्रमुख है। सामवेदीय ऋचाओं में विविध स्वरों एवं आलापों से प्रकृतिगान और ऊह तथा ऊह्यगान गाये गये हैं। प्रकृतिगान में ग्रामगेयगान और आरण्यक-गान हैं। प्रथम गान में आग्नेय, ऐन्द्र और पावमान - इन तीन पर्वों में प्रमुख रूप से क्रमशः अग्नि, इन्द्र और सोम के स्तुतिपरक मंत्र पढ़े गये हैं। आरण्यकमें अर्क, द्वन्द्व, व्रत, शुक्रिय और महानाम्नी नामक पाँच पर्वों का संगम रहा है।

ग्रामगेयगान और आरण्यकगान के आधार पर क्रमशः ऊहगान और ऊह्यगान प्रभावित हैं। विशेष करके सोमयागों में गाये जाने वाले स्तोत्र ऊह और ऊह्यगान में मिलते हैं। इन दोनों में दशरात्र, संवत्सर, एकाह, अहीन, सत्र, प्रायश्चित और क्षुद्रसंज्ञक सात पर्वों में ताण्ड्य ब्राह्मण द्वारा निर्धारित क्रम के आधार पर स्तोत्रों का पाठ है।

नारदशिक्षा में सामगानसम्बन्धी कुछ निर्देश हैं। संक्षेप में विशेष उल्लेखनीय बातें ये हैं -

(i) स्वर सात हैं,
(ii) ग्राम तीन हैं,

Scanned with CamScanner

(iii) मूर्च्छनाएं 21 हैं तथा
(iv) तान 49 हैं

~ "सप्त स्वराः त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः।
तानाः एकोनपञ्चाशद् इत्येतत् स्वरमण्डलम्॥"

नारदीय शिक्षा ने ही वर्णन किया है कि सामवेद के 1, 2, 3 आदि अंक क्रमशः मध्यम, गान्धार, ऋषभ आदि के सूचक हैं। जैसे

सामवेदीय अंक	(वीणा) वेणु के स्वर
1	मध्यम (म)
2	गान्धार (ग)
3	ऋषभ (रे)
4	षड्ज (स)
5	निषाद (नि)
6	धैवत (ध)
7	पञ्चम (प)

साम-योनि मंत्रों के ऊपर दिए गए अङ्कों की व्यवस्था दूसरे प्रकार की होती है। सामयोनि मन्त्रों के सामगानों के रूप में ढालने पर अनेक संगीतानुकूल शाब्दिक परिवर्तन किये जाते हैं। इन्हें सामविकार कहते हैं। ये षड्विध हैं →

(i) विकार → शब्द को आवश्यकतानुसार परिवर्तित करना। जैसे अग्ने के स्थान पर ओग्नायि।

(ii) विश्लेषण → शब्द या पद को तोड़ना। जैसे वीतये के स्थान पर 'वोयि तोया 2 यि'।

(iii) विकर्षण → एक स्वर को देर तक खींचना, उसे दो या अधिक मात्रा के बराबर बोलना। जैसे 'ये को या 2 3 यि'।

(iv) अभ्यास → किसी पद को बार-बार बोलना। जैसे-

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

तोयायि को दो बार उच्चारण

(v) विराम - गान की सुविधा के लिए शब्द को बीच में तोड़कर रुक जाना अर्थात् पद के मध्य में ही यति। जैसे गृणानो हव्यदातये को गृणानो ह। व्यदातये। उच्चारण करना अर्थात् हव्य के ह को पूर्व पद के साथ बोलना।

(vi) स्तोभ → आलाप के योग्य पदों को ऊपर से जोड़ लेना। जैसे- औ, होवा, हाउआ आदि गानानुकूल पद।

आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार ये विकार भाषाशास्त्र की दृष्टि से भी नितान्त मननीय हैं।

साम-गायन की पद्धति बहुत ही कठिन है। उसकी ठीक-ठीक जानकारी के लिए सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता है। साधारण ज्ञान के लिये यह जानना पर्याप्त है कि सामगान के पाँच भाग होते हैं →

(i) प्रस्ताव → यह मन्त्र का आरम्भिक भाग है जो हुँ से प्रारम्भ होता है। इसे प्रस्तोता नामक ऋत्विज् गाता है।

(ii) उद्गीथ → इसे साम का प्रधान ऋत्विज् उद्गाता गाता है। इसके आरम्भ में ॐ लगाया जाता है।

(iii) प्रतिहार → इसका अर्थ है दो को जोड़ने वाला। इसे प्रतिहर्ता नामक ऋत्विज् गाता है। इसी के कभी-कभी दो टुकड़े कर दिये जाते हैं।

(iv) उपद्रव → इसे उद्गाता गाता है।

(v) निधन → इसमें मन्त्र के अन्तिम दो पदांश या ॐ रहता है। इसका गायन तीनों ऋत्विक् प्रस्तोता, उद्गाता, प्रतिहर्ता - एक साथ मिलकर करते हैं।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner